2 सुदामा-सत्कार

- परिचयात्मक प्रश्न - क्या आपने मित्र बनाए हैं?
  - आपके मित्र आपके पड़ोस में है अथवा विद्यालय में भी है?
  - क्या बड़े होकर भी आप उनके मित्र बने रहेंगे?
- प्रतिबिंब - बालकों को परस्पर सच्चे मित्रों की भाँति व्यवहार करने को प्रेरित करना।
- परिकल्पना - क्या आप लोगों ने कृष्ण-सुदामा की मित्रता की कथा पढ़ी है?

सुदामा नाम के एक ब्राह्मण श्रीकृष्ण के परम मित्र थे। उन्होंने श्रीकृष्ण के साथ गुरुकुल में शिक्षा पाई थी। वे अत्यंत निर्धन थे। भगवान की उपासना और भिक्षाटन, यही उनकी दिनचर्या थी। भिक्षा में जो कुछ मिल जाता, उसी में सब संतुष्ट रहते थे। उनकी पत्नी परम पतिव्रता थी। वे अपने पति के साथ निर्धनता में भी संतुष्ट रहती थी।

एक बार जब परिवार को भूखों रहते कई दिन व्यतीत हो गए, तो अत्यंत दुखी मन से सुदामा की पत्नी पति से बोलीं-"स्वामी! भगवान श्रीकृष्ण आपके सखा हैं। वे ब्राह्मणों के परम भक्त हैं। आप उनके पास जाइए। जब वे जानेंगे कि आप अन्न के बिना दुखी हो रहे हैं तो वे आपको बहुत -सा धन देंगे। वे इस समय द्वारिका में निवास कर रहे हैं, आप वहाँ अवश्य जाइए। मुझे विश्वास है कि वे दीनानाथ आपके बिना कहे ही हमारी दरिद्रता दूर करेंगे।"

जब सुदामा की पत्नी ने उनसे कई बार द्वारिका जाने की प्रार्थना की, तब उन्होंने सोचा- "धन की तो कोई बात नहीं हैं, परंतु भगवान श्रीकृष्ण का दर्शन हो जाएगा, इसी बहाने जीवन का यह सर्वोत्तम लाभ प्राप्त होगा।" ऐसा सोचकर सुदामा ने द्वारिका जाने का निश्चय किया। उन्होंने अपनी पत्नी से कहा- "कल्याणी! घर में कोई वस्तु श्रीकृष्ण को भेंट देने योग्य हो, तो उसे दो।" ब्राह्मणी ने पास-पड़ोस के ब्राह्मणों के घर से चार मुट्ठी चावल माँगकर एक कपड़े में बाँध दिए और भगवान श्रीकृष्ण को भेंट देने के लिए पतिदेव को दे दिए। ब्राह्मण देवता उस भेंट को लेकर द्वारिका के लिए चल पड़े। वे मार्ग में यह सोचते जाते थे कि मुझे भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन किस प्रकार होंगे।

द्वारिका पहुँचने पर सुदामा अन्य लोगों से पूछते हुए श्री कृष्ण के महल तक जा पहुँचे। सब लोग उनकी दीन अवस्था देखकर उन पर हँस रहे थे। उन्होंने द्वारपाल से कहा- "भैया। जाकर श्रीकृष्ण से कह दो कि उनसे मिलने के लिए उनका बचपन का सखा सुदामा आया है।" पहले तो द्वारपालों को विश्वास न हुआ, परन्तु बाद में एक द्वारपाल ने जाकर श्रीकृष्ण से कहा- "प्रभो! द्वार पर एक बहुत ही गरीब ब्राह्मण खड़ा है। उसके तन पर चिथड़े झूल रहे हैं। पाँवों में बेवाइयाँ फटी हैं। उसकी दरिद्रता देखकर द्वारिका की धरती भी आश्चर्यचकित है। वह अपना नाम सुदामा बताता है, कहता है कि मैं श्रीकृष्ण का मित्र हूँ।"

'सुदामा' नाम सुनते ही श्रीकृष्ण नंगे पाँव दौड़ते हुए दरवाजे तक पहुँचे। देखते ही उन्होंने सुदामा को अपने अंक में ले लिया और कहा- "मित्र। तुम आए तो परंतु बहुत समय के बाद और बड़ा कष्ट भोगकर। यहाँ द्वारिका में तुम्हारा स्वागत है।"

भगवान श्रीकृष्ण ने सुदामा को ले जाकर अपने सिंहासन पर बैठाया। उनके पैरों को धोकर चरणामृत लिया तथा उन्हें स्नान कराकर रेशमी वस्त्र पहनने के लिए दिए। रुक्मिणी जी स्वयं उन्हें पंखा झलने लगीं और भगवान श्री कृष्ण ने उनके सामने नाना प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन परोसे।

बहुत समय तक आपस में बचपन की बातें करने के बाद श्रीकृष्ण ने कहा- "मित्र! भाभी ने मेरे लिए क्या भेजा है?" पहले तो सुदामा संकोच करते रहे, परंतु श्रीकृष्ण ने स्वयं उनसे पोटली लेकर, उसे खोलकर चावल निकाल ही लिए। भगवान ने चार मुट्ठी चावल को ग्रहण कर सुदामा को अपार संपत्ति प्रदान की। धन्य है भगवान श्रीकृष्ण की मित्रवत्सलता।

शब्दार्थ अत्यन्त = बहुत अधिक। निर्धन = गरीब। भिक्षाटन = भीख माँगने के लिए जगह-जगह घूमना। परम = बहुत अधिक। परम पतिव्रता = पतिव्रता धर्म का पूर्णतया पालन करने वाली। सखा = मित्र। दरिद्रता = गरीबी। दरिद्र = गरीब। सर्वोत्तम = सबसे उत्तम। तन = शरीर। अंक = गोद। अंक में ले लेना = बाँहों में भर लेना, गोद में बैठा लेना। नाना = अनेक।

अभ्यास-कार्य

पाठ से

■ बहुविकल्पीय प्रश्न

(क) सही विकल्प के सामने ✓ लगाइए:

1. सुदामा की जीविका का साधन था-
   (अ) कथा सुनाना ☐ (ब) भिक्षाटन ✓ (स) भजन गाना ☐
2. सुदामा की पत्नी सुदामा को कृष्ण के पास भेजना चाहती थीं, क्योंकि-
   (अ) कृष्ण उनके मित्र थे। ☐ (ब) कृष्ण द्वारिका के राजा थे। ☐
   (स) द्वारिकाधीश कृष्ण बिना कहे ही उनकी दरिद्रता दूर कर देंगे। ✓
3. सुदामा ने द्वारिका जाने का निश्चय यह सोचकर किया कि-
   (अ) वह अपने मित्र श्रीकृष्ण के दर्शन करेगा। ✓
   (ब) वह कृष्ण से सहायता प्राप्त करेगा। ☐
   (स) वह कृष्ण से बचपन की बातें करेगा। ☐
4. 'सुदामा' नाम सुनते ही कृष्ण-
   (अ) दौड़कर गए। ☐ (ब) नंगे पाँव दौड़कर गए। ✓ (स) मुस्करा कर बैठ गए ☐
5. चावल की पोटली-
   (अ) सुदामा ने स्वयं कृष्ण को भेंट की। ☐
   (ब) सुदामा ने रुक्मिणी को दे दी। ☐
   (स) कृष्ण ने स्वयं ही सुदामा से ग्रहण कर ली। ✓

(ख) उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए :

1. सब लोग सुदामा की दीन अवस्था देखकर उन पर हँस रहे थे। (दीन/वृद्ध)
2. प्रभो! द्वार पर एक बहुत ही गरीब ब्राह्मण खड़ा है। (भिखारी/ब्राह्मण)
3. कृष्ण ने सुदामा को अपने अंक में ले लिया। (अंक/बराबर)
4. भिक्षा में जो कुछ मिल जाता, उसी से गुजर होता। (भिक्षा/सेवा)
5. दीनानाथ आपके बिना कहे ही हमारी दरिद्रता दूर कर देंगे। (बीमारी/दरिद्रता)
6. सुदामा ने द्वारिका जाने का निश्चय किया। (साधु/सुदामा)

(ग) सही कथन के सामने ✓ तथा गलत के सामने × लगाइए :

1. एक दर्जन केले लेकर सुदामा द्वारिका पहुँचे। ×
2. सुदामा की पत्नी को विश्वास था कि भगवान श्रीकृष्ण उनकी दरिद्रता दूर कर देंगे। ✓
3. सुदामा श्रीकृष्ण के गुरू के पुत्र थे। ×
4. बहुत समय तक श्रीकृष्ण व सुदामा बचपन की बातें करते रहे। ✓
5. सुदामा भगवान श्रीकृष्ण के दर्शनों की प्रबल इच्छा रखते थे। ✓
6. सुदामा को श्रीकृष्ण से धन पाने की इच्छा थी। ×

(घ) रेखा खींचकर परस्पर संबद्ध शब्द-समूहों का सुमेल कीजिए :

1. भगवान श्रीकृष्ण	(य) दीनानाथ
2. द्वारिका	(अ) नगरी
3. श्रीकृष्ण-सुदामा	(ब) सखा
4. सुदामा की पत्नी	(द) परम पतिव्रता
5. गुरूकुल	(स) शिक्षा

■ शुद्ध उच्चारण कीजिए :

मित्रवत्सल भिक्षाटन पतिव्रता गुरुकुल सर्वोत्तम दरिद्रता

■ इनके उत्तर लिखिए :

1. सुदामा कौन थे?
   सुदामा एक गरीब ब्राह्मण और श्रीकृष्ण के परम मित्र थे।

2. सुदामा की पत्नी किस प्रकार की स्त्री थीं?
   सुदामा की पत्नी परम पतिव्रता स्त्री थीं।

3. सुदामा द्वारिका क्यों गए थे?
   सुदामा भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन करने द्वारिका गये थे।

4. सुदामा श्रीकृष्ण को भेंट करने के लिए क्या ले गए थे?
सुदामा श्रीकृष्ण को भेंट करने के लिये चार मुट्ठी चावल बांधकर ले गये थे।

5. श्रीकृष्ण ने सुदामा का स्वागत-सत्कार किस प्रकार किया?
श्रीकृष्ण ने सुदामा को गले लगाकर अपने महल में ले जाकर पैरों को धोकर, स्नान करवाकर, रेशमी वस्त्र पहनाकर, स्वादिष्ट भोजन करवाया।

भाषा की बात

(क) वर्तनी सुधारकर लिखिए:

1. संतुषट	संतुष्ट	2. आशचर्य	आश्चर्य	3. प्राथना	प्रार्थना
4. दरीद्र	दरिद्र	5. परीवार	परिवार	6. सर्वोतम	सर्वोत्तम
7. पतीव्रता	पतिव्रता	8. ब्राहमण	ब्राह्मण		

(ख) संज्ञा पदों पर गोला खींचिए:

1. सुदामाजी द्वारिका में श्रीकृष्ण के महल तक पहुँच गए थे। संज्ञा = सुदामाजी
2. वे हमारी दरिद्रता दूर करेंगे। संज्ञा = वे

(ग) सर्वनाम पदों पर गोला खींचिए:

1. वे हमारी दरिद्रता दूर करेंगे। सर्वनाम = वे
2. आप वहाँ अवश्य जाइए। सर्वनाम = आप

(घ) लिंग निर्णय कीजिए:

1. पोटली	स्त्रीलिंग	2. पति	पुल्लिंग	3. श्रीकृष्ण	पुल्लिंग
4. चावल	पुल्लिंग	5. पत्नी	स्त्रीलिंग	6. नगरी	स्त्रीलिंग

(ङ) निम्नलिखित के समानार्थी शब्द लिखिए:

1. गरीब	दरिद्र	2. दशा	अवस्था	3. वस्त्र	कपड़ा
4. शरीर	तन	5. मित्र	दोस्त	6. यकीन	भरोसा
7. मासिक	महिना	8. रास्ता	राह		

कुछ करने की बात

(क) प्रस्तुत कहानी को कक्षा में अपने शब्दों में सुनाइए।
(ख) श्रीकृष्ण की लीलाओं से संबंधित कोई प्रसंग पता करके कक्षा में सुनाइए।
(ग) श्रीकृष्ण महाभारत के युद्ध में अर्जुन के सारथी क्यों बने व कुरुक्षेत्र की भूमि पर गीता का उपदेश क्यों दिया, पता करके कक्षा को बताइए।